

सन्तुष्टता ही सम्पूर्णता की निशानी है

सभी इस समय अपने फीचर्स और फ्यूचर को जान सकते हो? जितना-जितना समय के समीप जा रहे हो, समय के प्रमाण अपनी सम्पूर्णता की निशानियाँ अनुभव में आती हैं? सम्पूर्णता की मुख्य निशानियाँ कौन-सी हैं? आत्मा सम्पूर्णता को पा रही है—यह मुख्य किस बात में सबको अनुभव होता है? मुख्य बात यह है कि ऐसी आत्मा सदा स्वयं से सर्व सब्जेक्ट्स में सन्तुष्ट रहने का अनुभव करेगी और साथ-साथ अन्य आत्मायें भी उनसे सदा सन्तुष्ट रहेंगी। तो सन्तुष्टता ही सम्पूर्णता की निशानी है। जितना-जितना सर्व आत्माओं की सन्तुष्टता का आशीर्वाद व सूक्ष्म स्नेह तथा सहयोग का हर समय रेसपॉन्स मिले—इससे समझो कि इतना सम्पूर्णता के समीप आये हैं। कमाल इसमें है जो कैसे भी संस्कारों वाली, असन्तुष्ट रहने वाली आत्मा सम्पर्क में आये, वह भी सम्पर्क में यह अनुभव करे कि मैं अपने संस्कारों के कारण ही असन्तुष्ट रहती हूँ लेकिन इन विशेष आत्माओं की मेरे प्रति स्नेह व सहयोग की व रहमदिल की शुभ भावना सदा नज़र आती है अर्थात् वह अपनी ही कमज़ोरी महसूस करे। वह कम्पलेन्ट यह न निकाले कि यह निमित्त बनी हुई आत्मायें मुझ आत्मा को सन्तुष्ट नहीं कर सकती। सर्व आत्माओं द्वारा ऐसी सन्तुष्टमणी का सर्टिफिकेट प्राप्त हो, तब कहेंगे कि यह सम्पूर्णता के समीप हैं। जितनी सम्पूर्णता भरती जायेगी, उतनी ही सर्व आत्माओं की सन्तुष्टता भी बढ़ती जायेगी।

सर्व को सन्तुष्ट करने का मुख्य साधन कौनसा है? (हरेक ने बताया) यह सब बातें भी आवश्यक हैं। यह सब बातें परिस्थिति में प्रैक्टिकल करने की हैं। मुख्य बात यह है कि जैसा समय, जैसी परिस्थिति, जिस प्रकार की आत्मा सामने हो, वैसा अपने को मोल्ड कर सकें। अपने स्वभाव और संस्कार के वशीभूत न हों। स्वभाव अथवा संस्कार ऐसे अनुभव में हों जैसे स्थूल रूप में जैसा समय, वैसा रूप, जैसा देश वैसा वेश बनाया—ऐसा सहज अनुभव होता है? ऐसे अपने स्वभाव-संस्कार को भी समय के अनुसार परिवर्तन कर सकते हो?

कोई भी सख्त चीज़ मोल्ड नहीं हो सकती है। कड़े संस्कार भी समय-प्रमाण मोल्ड नहीं कर सकते। इसलिए ऐसे इज़ी संस्कार हों कि जैसा समय, वैसा बना सकें। यह प्रैक्टिस होनी चाहिए। संकल्प भी न आये कि मेरे भी कोई संस्कार हैं, कोई स्वभाव है। जो अनादि-आदि संस्कार हैं, वही स्वरूप में हों।

संस्कारों का परिवर्तन अनादि काल से है अर्थात् चक्र में आने से ही परिवर्तन में आते रहते हैं। तो आत्मा में संस्कार-परिवर्तन का ऑटोमेटिकली अभ्यास है। कभी सतोप्रधान, कभी सतो, रजो व तमो संस्कार समय प्रमाण बदलते ही रहते हैं। अब जबकि नॉलेजफुल हो, ऊँचे-से-ऊँची स्टेज पर पार्टधारी बन पार्ट बजा रहे हो, पॉवरफुल भी हो, ब्लिसफुल भी हो, सर्वशक्तिमान् के वर्से के अधिकारी भी हो तो स्वभाव-संस्कार को समय-प्रमाण व सेवा-प्रमाण किसी के कल्याण के प्रति व स्वयं की उन्नति के प्रति परिवर्तन करना अति सहज अनुभव हो—यह है विशेष आत्माओं का अन्तिम विशेष पुरुषार्थ। ऐसे पुरुषार्थ के अनुभवी हो? ऐसे सम्पूर्ण गोल्ड बन गये हो? इससे अपने नम्बर को चेक कर सकते हो व अपने संगमयुगी भविष्य रिजल्ट को जान सकते हो? निमित्त बनी हुई विशेष आत्माएँ हो ना? तो इसकी परसेन्टेज निकालो, स्वभाव, संस्कार को अपने शस्त्र के स्वरूप में यूज़ कर सकते हो या यह मुश्किल है? इस बात में सफलता की कितनी परसेन्टेज है? दूरबाज खुशबाज वाला नहीं, किनारा करने वाला नहीं। सम्पर्क में आते हुए, सम्बन्ध में रहते हुए स्वयं ही अपना सम्पर्क, सम्बन्ध बढ़ाते सफलतामूर्त बने तब नम्बर आगे ले सकते हैं। बेहद के मालिक का बेहद से सम्बन्ध चाहिए ना। वह कैसे होगा? चान्स मिलता नहीं—लेकिन हर कार्य के योग्य स्वयं की योग्यताएँ स्वतः ही निमित्त बना देती हैं।

इस वर्ष में ऐसी विशेषता दिखाओ जैसे साकार बाप की विशेषता देखी। हर-एक के दिल से यह आवाज़ निकलता

22-07-12 प्रातःमुरली ओम् शान्ति “अव्यक्त-बापदादा” रिवाइज: 07-02-75 मधुबन

रहा—हमारा बाबा! चाहे कोई भी हो, फिर भी “हमारा बाबा!”—यह अनुभव हर आत्मा का रहा। ऐसे सर्व विशेष आत्माओं के प्रति जब तक सर्व आत्माओं द्वारा यह स्नेह का व अधिकार का, अपनेपन की आवाज़ न निकले, तब तक समझो कि विश्व के मालिकपन के तख्तानशीन नहीं बन सकते। ऐसे सफलता की निशानी दिखाई देवे। हर एक अनुभव करे कि ये विशेष आत्माएँ विश्व-कल्याण के प्रति हैं। यह है सम्पूर्णता की निशानी। अच्छा!

22-07-12 प्रातःमुरली ओम् शान्ति “अव्यक्त-बापदादा” रिवाइज: 08-02-75 मधुबन

निश्चय रूपी आसन पर अचल स्थिति

सभी अपने को निश्चय रूपी आसन पर स्थित अनुभव करते हो? निश्चय का आसन कभी हिलता तो नहीं है? किसी भी प्रकार की परिस्थिति या प्रकृति या कोई व्यक्ति निश्चय के आसन को कितना भी हिलाने का प्रयत्न करे, लेकिन वह हिला न सके—ऐसे अचल-अडोल आसन है? निश्चय के आसन में सदा अचल रहने वाला निश्चय-बुद्धि विजयन्ति गाया हुआ है। तो अचल रहने की निशानी है—हर संकल्प, बोल और कर्म में सदा विजयी। ऐसे विजयी रत्न स्वयं को अनुभव करते हो? किसी भी बात में हिलने वाले तो नहीं हो? जो समझते हैं कभी कोई बात में हलचल मच सकती है या कोई प्रकार का संकल्प भी उत्पन्न हो सकता है, ऐसे पुरुषार्थी हाथ उठाओ। ऐसे कोई हैं जो समझते हैं कि हाँ हो सकता है? अगर हाथ नहीं उठायेँगे तो पेपर बड़ा कड़ा आने वाला है, फिर क्या करेंगे? कोई भी मुश्किल पेपर आये उसमें सभी पास होने वाले हो, तो पेपर की डेट अनाउन्स करें। सब ऐसे तैयार हो? फिर उस समय तो नहीं कहेंगे कि यह बात तो समझी नहीं थी और सोची नहीं थी, यह तो नई बात आ गई है? निश्चय की परीक्षा है कि जिन बातों को सम्भव समझते हो, वह असम्भव के रूप में पेपर बनकर आयेंगी, फिर भी अचल रहोगे?

निश्चय-बुद्धि बनने की मुख्य चार बातें हैं। चारों में परसेन्टेज फुल चाहिए। वह चार बातें जानते भी हो और उन पर चलते भी हो। पहली बात (1) बाप में निश्चय—जो है, जैसा है, जिस स्वरूप से पार्ट बजा रहे हैं, उसको वैसा ही जानना और मानना। (2) बाप द्वारा प्राप्त हुई नॉलेज को अनुभव द्वारा स्पष्ट जानना और मानना। (3) स्वयं भी जो है, जैसा है अर्थात् अपने अलौकिक जन्म के श्रेष्ठ जीवन को व ऊँची ब्राह्मण जीवन को, अपने श्रेष्ठ पार्ट को, अपनी श्रेष्ठ स्थिति और स्थान का जैसा महत्व है, वैसा स्वयं का महत्व जानना, मानना और उसी प्रमाण चलना। (4) वर्तमान श्रेष्ठ, पुरुषोत्तम, कल्याणकारी, चढ़ती कला के समय को जानना और जान करके हर कदम उठाना। इन चारों ही बातों का पूर्ण निश्चय प्रैक्टिकल लाइफ में होना—इसको कहा जाता है—निश्चयबुद्धि विजयन्ति।

चारों ही बातों में परसेन्टेज भी चाहिए। निश्चय है, सिर्फ इस बात में भी खुश नहीं होना है। लेकिन क्या परसेन्टेज भी ऊँची है? अगर परसेन्टेज एक बात में भी कम है तो निश्चय का आसन कोई भी समय अथवा कोई छोटी परिस्थिति भी डगमग कर सकती है इसलिए परसेन्टेज को चेक करो क्योंकि अब सम्पन्न होने का समय समीप आ रहा है। तो छोटी-सी कमी समय पर बड़ा नुकसान कर सकती है क्योंकि जितना-जितना अति स्वच्छ, सतोप्रधान बन रहे हो, अति स्वच्छ स्टेज पर आज जो छोटी-सी कमी लगती है व साधारण दाग अनुभव होता है, वह बहुत बड़ा दिखाई देगा इसलिए अभी से ऐसी सूक्ष्म चेकिंग करो और कमी को सम्पन्न करने का तीव्र पुरुषार्थ करो। दिन-प्रतिदिन जितना श्रेष्ठ बनते जा रहे हो उतना विश्व की हर आत्मा की निगाहों में प्रसिद्ध होते जा रहे हो। सबकी नज़र आपकी तरफ बढ़ती जा रही है। अब सबके अन्दर यह इन्तज़ार है कि कब स्थापना के निमित्त बने हुए ये लोग सुख-शान्तिमय नई दुनिया की स्थापना का कार्य सम्पन्न करते हैं, जो यह दुःखदाई दुनिया स्थापना के आधार पर परिवर्तित हो जायेगी। उन्हीं की नज़र स्थापना करने वालों पर है और स्थापना करने वालों की नज़र कहाँ है? अपने कार्यों में मग्न हो

वा विनाशकारियों की तरफ नज़र रखते हो? विनाश के साधनों के समाचारों को सुनने के आधार पर तो नहीं चल रहे हो? वह ढीले होते तो आप भी ढीले हो जाते हो? क्या स्थापना के आधार पर विनाश होना है या विनाश के आधार पर स्थापना होनी है? स्थापना करने वाले विनाश की ज्वाला प्रज्ज्वलित करने के निमित्त बने हुए हैं, न कि विनाश वाले स्थापना करने वालों के पुरुषार्थ की ज्वाला प्रज्ज्वलित करने के निमित्त हैं।

स्थापना वाले आधारमूर्त हैं। ऐसे आधार-मूर्त इसी विनाश की बात पर हिलते तो नहीं? हलचल में तो नहीं हो? होगा या नहीं होगा? लोग क्या कहेंगे या लोग क्या करेंगे? यह व्यर्थ संकल्प निश्चय के आसन को डगमग तो नहीं करता? सबने निश्चय-बुद्धि में हाथ उठाया ना? निश्चय अर्थात् किसी भी बात में क्यों, क्या और कैसे का संकल्प भी उत्पन्न न हो, क्योंकि संशय का रॉयल रूप संकल्प का रूप होता है। संशय नहीं है लेकिन संकल्प उठता है, तो वह संकल्प किसके वंश का अंश है?

जबकि चारों ही बातों में सम्पूर्ण निश्चय-बुद्धि हो तो फिर यह संकल्प उत्पन्न हो सकता है? जबकि है ही कल्याणकारी युग, कल्याणकारी बाप की श्रीमत पर चलने वाली आत्मायें, तो सिवाए कल्याण के, चढ़ती कला के और कोई भी संकल्प कर नहीं सकती हैं। उनका हर समय, हर संकल्प, हर कार्य के प्रति समर्थ संकल्प होगा, व्यर्थ नहीं होगा। घबराते तो नहीं हो? सामना करना पड़ेगा। पेपर का सामना करना अर्थात् आगे बढ़ना अर्थात् सम्पूर्णता के अति समीप होना। अब यह पेपर आने वाला है। स्वयं स्पष्ट बुद्धि वाले होंगे तो औरों को भी स्पष्ट कर सकेंगे। इसका मतलब यह तो नहीं समझते हो कि होना नहीं है। ड्रामा में जो होता रहा है, समय-प्रति-समय, उसमें माखन से बाल ही निकलता है ना? कोई मुश्किल हुआ है? बाप-दादा नयनों पर बिठाए, दिल तख्त पर बिठाए पार करते ले आ रहे हैं ना? क्या अन्य कोई भी अन्त तक साथ निभाने का या किसी भी परिस्थितियों से पार ले जाने का वायदा व कार्य निभायेंगे? बाप को साथ ले ही जाना है न। सर्वशक्तिमान् साथी होते हुए भी कोई भी संकल्प उत्पन्न होना—इसको क्या कहेंगे? ऐसे व्यर्थ संकल्प समाप्त कर जिस स्थापना के कार्य के निमित्त हो, बाप-दादा के मददगार हो, उस कार्य में मग्न रहो। अपनी लगन की अग्नि को तीव्र करो। जिस लगन की अग्नि से ही विनाश की अग्नि तीव्र गति का स्वरूप धारण करेगी। अपने रचे हुए अविनाशी ज्ञान यज्ञ, जिसके निमित्त ब्राह्मण बने हुए हो, इस यज्ञ में पहले स्वयं की सर्व कमज़ोरियों व कमियों की आहुति डालो, तभी सारी पुरानी दुनिया की आहुति पड़ने के बाद समाप्ति होगी। अब दृढ़ संकल्प की तीली लगाओ, तब यह सम्पन्न होगा। अच्छा!

ऐसी लगन में मग्न रहने वाले, सदा निश्चय के आसन पर स्थित रह कार्य करने वाले, हर परिस्थिति में अचल और अडोल रहने वाले, बाप-दादा के सदैव समीप और सहयोगी, ऐसे स्नेही आत्माओं को बाप-दादा का याद प्यार और नमस्ते!

वरदान:- निर्माणता की विशेषता द्वारा सहज सफलता प्राप्त करने वाले सर्व के माननीय भव

सर्व द्वारा मान प्राप्त करने का सहज साधन है—निर्माण बनना। जो आत्मायें स्वयं को सदा निर्माणचित की विशेषता से चलाती रहती हैं वह सहज सफलता को पाती हैं। निर्माण बनना ही स्वमान है। निर्माण बनना झुकना नहीं है लेकिन सर्व को अपनी विशेषता और प्यार से झुकाना है। वर्तमान समय के प्रमाण सदा और सहज सफलता प्राप्त करने का यही मूल आधार है। हर कर्म, सम्बन्ध और सम्पर्क में निर्माण बनने वाले ही विजयी-रत्न बनते हैं।

स्लोगन:- नॉलेज की शक्ति धारण कर लो तो विघ्न वार करने के बजाए हार खा लेंगे।